ॐ

सिखों की वाजबुलअर्ज़

(अर्थात्)

कलिप्रभाव से सिखों को हिंदूधर्म्म से ग्लानी होने पर दसवें गुरु से दस प्रश्न करने और उन्होंने आपने हाथ से उनके उत्तर लिखकर हिंदूधर्म में कायम रखने की हिदायत करदी

जिसको

गुरुविद्यारत्न सुखलाल उपदेशक

श्रीभारतधर्म महामंडल रोपड़ निवासी ने

सनातनधर्म प्रेस मुरादाबाद में

छपाकर प्रकाशित कराया

प्रथमबार १०००] [मूल्य -)

श्रीगणेशाय नमः

भूमिका

महाशयगण! इस समय तत्तखालसा। को हिंदू-जाति हिंदूधर्म हिंदूकर्म मे कुछ ऐसा विरोध होगया है जो अपने गुरुओं की आज्ञा की परवाह न करके केवल मिथ्या हठधर्मी से गुरुवचनों के अर्थ उलटफेर करके मनमत्त चला रहे हैं और भोलेभाले सिंहों को कपोलकल्पित आधुनिक लोगों के वाक्य सुनाकर सिखीमत से च्युत करते जाते हैं जो क्रिया कर्म सदैव से सिखों में प्रचलित थे शनैः शनैः घटते जाते हैं गुरु आज्ञाविरुद्ध स्वार्थी प्रपंची लोग गुटके बनाकर और मनमत्त सुनाकर सीधेसादे पुरुषों को नारकी बनारहे हैं यह हवा अभी नहीं चली पूर्वकाल में दसवें पातशाह के समय भी केचित् मूर्खों ने यह बीड़ा उठाया था परन्तु गुरुजी ने अपनी वाणी-रूपी बज्र से तुरत सब को उत्तर देकर चूर चूर

करादिया था अब दो सौ २०० वर्ष पश्चात् फिर वही तूफान पेटार्थियों ने उठाया है वाहगुरु सच्चे सिखों की अरदास सुनकर कोई धर्मशील शूर वीर पुरुष उत्पन्न करके अपने सच्चे धर्म पर सिंहों को दृढ़ करावे अब भूतकाल का हाल सुनाते हैं एक समय सर्वत्र वासियों के सिखों ने अपने दस प्रश्नों की एक वाज़ुबुल अर्ज़ लिखकर दसवें पातशाह के हजूर में पेश की उन के उत्तर उन्होंने अपनी कलम से लिखकर उनको दिये जिनकी नकल गुर १० वें के हजूरीये ग्रंथी भाई मनीसिंह जी ने अपने ग्रंथ भक्तरत्नावली में लिखी है यह श्रीमुखवाक्य भाई मनीसिंह का लेख है इस में कोई सिंहमात्र ननु नच नहीं कर सक्ता जो गुरुमत के विद्वान् ग्रंथसाहिब के कोशरचयिता भक्तों की वाणी पर टीकाकर्ता पं० तारासिंह जी ज्ञानी पटयाला निवासी ने अपने (गुरुमतनिर्णयसागर) में नकल की है उस से नकल करके समीक्षा की जाती है अब यातो तत्त-

खालसा इस पर ईमान लावें या इसीप्रकार श्रीमुख-वाक्य से इसका खंडन करके दिखलावें । यूंही चौपासिंह दयासिंह आदि मनमतियों (तोसीफोसना) मोहसिन सूफी दबिस्तान मज़ाहिब अन्य मतियों की लुप्त किताबों के वाक्य सुनाकर सिंहों को उभय भ्रष्ट न करें बल्कि हम को यह भी भय है कि कहीं शनैः शनैः कुरान तौरेत अंजील आदि के वचन सुनाकर नवीन सिंहों को धर्म से च्युत न करने लगजावें क्योंकि (हम हिंदू नहीं) के तीसरे एडीशन में भाई कान्हसिंह जी ने फारसी की बैतां 'दबिस्तानमज़ाहिब' की इबारतां अति लिखी हैं और प्रण यह किया है कि हम आद ग्रंथसाहिब बिना अन्य पुस्तक को स्वीकार नहीं करते अब उनसे कोई पूछे कि भाई जी प्रतिज्ञा पालन इसी का नाम है कहना कुछ करना कुछ, अलम् ।

सं० १९६४ फगण होलाष्टक

ह० सुखलाल उपदेशक रोपड़

अथ वाजबुल अर्ज़

एक समे सरवत सिखां वासिआं वालिआं आन अर्दास कीती जो साहिब नै खालसा वरताइआ है सही पातिशाह अर्दासां दस तुहाडे पासों पुछदे हां तुसी दसां ही प्रश्णांदा उत्तर कृपा करके असां नू लिखो जी तां उनां वाजबुल अर्ज़ लिखदित्ती इसदे उपर दस्तखत खास नाल उत्तर लिख दित्ते सिखां दी शंका निवारण वास्ते ॥ पहला प्रश्न ॥ अग्गे विवाह दे समे असी वेदपाठी ब्राह्मणां नू बुलाइकै वेदमंत्रों से विवाह करदे सांते हुन सिख कहदे हैन तुसी आनंद पड़ा के विवाह करो ब्राह्मणां नू ना बुलावो ॥ उत्तर ॥ पहले आनंद पड़ना अरदास करनी पिछे ब्राह्मणां से हमेशा जिसतरां वेदमंत्र पड़ावदे आये हा तिवैं पड़ावना संसा नहीं करना ॥

(नोट)

अतत्त्वखालसा जी अपक्षपात से देखो कलगीधर जी का कैसा स्पष्ट वाक्य है और आपके माननीय भाई मनीसिंह जी ने लिखा है इस का बाधक कौनसा श्रीमुख वाक्य आपके पास है जिस से आदग्रंथसाहिब के गिरदे फिरकर फेरे लेते हो और वेदमंत्रों से विवाह नहीं कराते।

हम दावे से कहते हैं कि गुरुघर में समग्र विवाह वेदरीति से हुये इतिहास ग्रंथों में लिखे हैं नहीं तो इसके विरुद्ध कोई प्रमाण दिखलावे आप यह नहीं सोचते कि ग्रंथ साहिब तो हमारा गुरु है गुरु की परिक्रमा करने से विवाह कब होसक्ता है बल्कि कुछ और साक होजाता है देखो पोथी खालसा-सुधारतरू आठवीं संची सफा ४५० ग्रंथसाहिब से विवाह को भैण भाई का विवाह लिखा है फिर उस वक्त यह शब्द पढ़ते हो (आनंद भया मेरी माये सतगुर मैं पाइआ) आश्चर्य की वार्ता है स्त्री को माये सतगुरु कहा जावे और यह बात आप

की मंतव्य है कि स्त्री अथवा पुरुष जव अमृत छक लेते हैं तो गुरु गोविंद सिंह जी और माता साहिब देवां के पुत्र होजाते हैं सोडवंसी पटना निवासी कहलाते हैं किसी जात का हो सब एक माता पिता के पुत्र होजाते हैं देखो गुरमतप्रभाकर में लेख इस से सिद्ध होगया कि समग्र सिंह सिंहणी भैन भाई हैं फिर आपस में विवाह होना कैसा अयोग्य है किसी मत में ऐसा नहीं होता और इस से कोई किसी का सोहरा जमाई नाना दादा चचा ताया आदि कुछ न रहा सब भैन भाई होगये और तत्त खालसा केवल आदि ग्रंथसाहिब को मानता है सो उस में कोई आज्ञा नहीं कि किस से विवाह कराना चाहिये किस से न कराना । शायद इसी कारण यह बुराई प्रतीत नहीं होती फिर ग्रंथसाहिब में ४८ पुरुषों की वाणी और उन के नाम जिन में समग्र गुरु और ब्राह्मण भट्ट मुसलमान रमदासिये सब हैं वकरे के चर्म की जिल्द रूमाल काष्ट की चौकी लोहे समेत होती है उस के गिरद फिरकर

फेरे लेने कैसी बुद्धि की वार्ता है अपनी गुरु आज्ञानुसार विवाह से पहिले आनंद बेशक पढ़ो अरदास कराओ दोनों में परमेश्वर का भजन है परन्तु फेरे वेदरीति से कराओ नहीं तो केवल मनमत्त है जो चाहो सो करो आप के गुरु साहिबान इस बात को जान ते थे कि हमारी संगत में कुछक स्वार्थि प्रपंची पाखंडी उत्पन्न होकर हमारे शब्दों के अर्थों को उलट पुलट करके वेदविरुद्ध पंथा चलावेंगे और विवाहादि संस्कार मनमत्त से करावेंगे।

इसकारण पहिले ही फरमा दिया है यथा (कलि परवाणु कतेब कुराणु) अर्थात् कलियुग में तो कुराण और कानून कियां रिवाजी किताबें प्रमाण होंगी उनपर अमल होगा और (पोथी पंडित रहे पुराणु) अर्थात् पुराणों की पोथियां और पंडित पुराने होजावेंगे कोई बात न पूछेंगे। और (काजिआं बाहमणांदी गल्ल थकी अगद पड़ै शैतान वेलाले) अगद (अ़कद) विवाह अर्थात् काजियां पंडितों की कोई बात न पूछेगा लग्न महूर्त आदि

कोई न दिखावेगा शैतान यानी अन अधिकारी लोग सवा रुपैया अरदास लेके दलिआ भात या कड़ाह प्रसाद छककर गठजोड़ करादिआ करेंगे मूर्खों को कम खरच से वही पसंद होगा वास्तव में वही समय अब है और वचित्र नाटक में भी है ॥ संकर वर्ण प्रजा सभ होई। एक ज्ञात को रहा न कोई। भिन्न२ ग्रहि ग्रहि मत होई। शासत्र सिमृति छुवे न कोई॥ एक एक के पथन चल हैं। एक एक की बात उथल हैं॥ आप आप पारब्रह्म कहे हैं। ऊँच नीच कह सीस न नै हैं। पुन और २ नये नये मत मास मास उचाइंगे। देव पितरन पीर को नहीं भूल पजन जाहिंगे। जप हैं न भवानी अकथ कहानी पाप कर्म रति ऐसे। मानि हैं न देवियं अलख अभेवीय दुर कृतं मुनवर जैसे।

आद ग्रथसाहिब में विवाहविधी सब हिंदू रीति वेदानुसार लिखी है देखो हमारी नवीनसिंह शिक्षा जिस में विस्तार से सब प्रमाण दरज हैं दो प्रमाण यहां भी पाठकगणों के अवलोकनार्थ लिखे जाते हैं यथा—आइआ लगनु गणाइ हिरदै धनओमाहीआ

बलिरामजीउ।पंडित पाधेआणि पत्रीबहि वाचाईआ। बलिरामजीउ॥रा०म०छं०म०४,शब्द १ तु०४ हरि पहिलड़ी लाव परविरती कर्म द्रिड़ाईआ बलिराम जीउ॥बाणी ब्रह्मा वेदु धर्म द्रिड़हु पाप तजाईआ बलीराम जीउ रा०सू०छंत महल्ला४।शा०२।तु०१।

दूसरा प्रश्न॥ अग्गे असी सब नाल वरतदे थे अब आपका हुकम है पंजां (धीरमलिये १ रामराइये २ मीणे ३ मसंद ४ सिरगुम्म* ५) साथ ना वरतो जे भुल्लके वर्ताजावे तां क्या करिये।

उत्तर॥ पहिले पुछके वरतना चाहिये जे भुल्लके वरतो तां अरदास करादेनी॥

(नोट)

* सिरगुम्म (नंदचंद के संघे निगुरे तुर्क सरे बड़े) देखो कलगीधरजी सनातनधर्म के कैसे पक्के आज्ञाकारी थे जो अपने सिक्खों को सर बड़ों आदि के साथ वरतने से हटादिया कि यह सनातनधर्मानुसार क्रिया कर्म आदि संस्कार वेदरीति से नहीं करते तीर्थस्नान को नहीं जाते तुम उनसे मत वर्तो इसीप्रकार पहिले गुरुओं ने भी इनकी निंदा करी है

यथा (ओनां पिंड न पत्तल किरिआ दिवा मुये कि थाऊं पाहीं । अठसठ तीरथ देन न ढोई ब्रह्मण अन्न न खाहीं ॥ सदा कुचील रहहि दिनराती मत्थै टिक्के नाहीं ॥ तत्तजी फिर आप क्यों सरे वड़ों की सदृश सब कर्म धर्म छोड़ते जाते हो आपका कहां भला होगा प्रसंगानुसार और सुनिये ॥ एकसमय मुस-लमान गुरु नानकजी के सामने कहनेलगे कि देखो हिंदू मुरदे जलाते हैं और हम दबाते हैं इस से हम अच्छे हैं बावे ने उनके खंडन अपने मंडन में यह शब्द कहा जिससे उनके यहां भी मुरदा जलाना सिद्ध करादिया ॥ यथा ॥ (मिट्टी मुसलमान दी पेढे पई घुमयार । घड़ भांडे इट्टां कीआं जलदी करे पुकार ॥ जलजल रोवै बपड़ी झड़झड़ पवै अंगयार । नानक जिन करते कारण कीआ सो जाने करतार) म० १–आसादी वार ॥ अर्थ–जहां कबरस्थान होते हैं वहां कबरों के निशान मिटजाने से घुमार लोग वहां की मिट्टी लाकर इट्टां या बरतन बनाकर आग में पकाते हैं तब मुसलमानों के शरीर की मिट्टी

जलती और पुकारकरती है उससे अंगार झड़ते हैं जिस ईश्वर ने सब जगत् को रचा है वह इन सब भेदों को जानता है । देखो गुरुसाहिव अपने हिंदूधर्म की हिमायत कैसी करते हैं ॥

प्रश्न ३ । सच्चे पातशाह अग्गे असी सहजधारी तेरे सिख माता पिता दे मरने पर क्रिया करम भद्दर जेड़ी संसार दी रीत थी सो करदे थे हुन सिख आखदे हैन जो खालसा वाहगुरुजी ने वनाया है तुसी एह रहतां संसारिआं दीआं न करया करो क्या हुकम है ॥ उत्तर ॥ भद्दन नहीं करना अते होर क्रिया करम करतूत जैसी देशचाल होवै तिवैं करकै वखशाय लेना ।

(नोट)

तभखालसा जी देखो क्या आज्ञा है और तुम क्या कर रहे हो यही सच्ची सिक्खी है यदि अब भी मनमत्त से हिंदू रसूम स्वीकार न करोगे तो मुरदे का जलाना भी छोड़दो यद्यपि भद्दनों का यहां निषेध है परन्तु कई वाक्य इस के विरुद्ध भी हैं

भावें लांबे केश धर भावें घर रमुडाय "केशधरे न मिले हरि पियारे" "ना हरि भजिओ न तीरथ सेवयो चोटी काल गही" चोटी उसी के होती है जिस के केश नहीं होते यह तीनों ग्रंथसाहिब के वचन हैं दसवें ग्रंथसाहिब में भी श्रीमुख वाक्य हैं

(१) मूत्रद्वार तिन सीस मुड़ाए (दसम ग्रंथ-साहिब श्रीमुख वाक्य पातसाही १० वचित्र नाटिक ग्रंथ अध्याय १३ कवत्ता अंक १८)

(२) केस बड़े सिख से बुरे अर देह में रोमबड़े जिन के ॥ मुखमों नरहाडन चापत हैं ॥ पुनह दांत सों दात वज तिनके ॥ सर श्रोणत को अखोआं जिन को संग कौन फिरै बलकै इनकै ॥ सरचाप चढ़ाए के रैन फिरें सभ काम करें नित पापन के ॥

(दसम पातसाही गुरु ग्रंथसाहिब श्रीमुख पातसाही १० बड़ा वचित्र नाटक ग्रंथ कृष्ण अवतार कवता अंक १४६३)

मित्रो सिखों में प्रसिद्ध है कि जिसके केश होते हैं उस के नाम के अंत में सिंह अवश्य होता है

परन्तु इनके आदगुरु बावा नानक से लेकर नौमे गुरुतक किसी का नाम सिंह युक्त नहीं बल्कि गोविंदसिंहजी का नाम भी दशम ग्रंथसाहिब में गोविंददास लिखा है और छीवें गुरु के बेटे का नाम सूर्य्यमल्ल था फिर यह केशोंपर इतने लट्टू क्यों हो रहे हैं और वास्तव में गुरुसाहिबों का जो बाणा था उस को छोड़गये हैं वह यज्ञोपवीत पहनते थे अबके खालसा इस के विरोधी हैं नानक जी से लेकर सब गुरु यज्ञोपवीत धारन करते रहे नौमें गुरु की बावत दसवें गुरु खुद कहते हैं (तिलक जंञूराखा प्रभुतांका) इसीप्रकार तिलक लगाते और जनेऊ पैहरते थे नानक जी के चित्रों में तिलक लगा हुआ है तीसरे गुरु अमरदास जी नित्य तिलक लगातेथे देखोसूर्यप्रकाश-नौमें गुरुका तिलक पिछली तुक में लिखागया इसीप्रकार वह नित्य उपनिषदों पुराणों की कथा सुनते थे अब सिख गालियां देते हैं मित्रो सब बातें छोड़कर नवीन सिख केवल केशों की पूजा में रहते हैं जो टूटकर मुरदार के तुल्य होजाते हैं।

प्रश्न ४ ॥ विवाह समे और व्याही श्राद्ध के दिन अगे हम ब्राह्मणों को भोजन कराओंदे थे हुन सिख आखदे हैन सिखां नू छकाया करो क्या हुकम है ॥ उत्तर ॥ सिखां ब्राह्मणां अतिथिआं नू भलीप्रकार प्रीति करके सब को छकाया करो ॥

(नोट)

नवीन सिंहो आपने तो श्राद्धों को ही तिलांजली देदई ब्राह्मणों को कहां सिखों को भी नहीं छकाते इसीका नाम गुरुआज्ञा पालन है? शोक २ आप ब्राह्मणों के पेट को लैटरबक्स बतलाते हो और रसीद मांगते हो अब अपने गुरुआज्ञा अनुसार सिखों के पेटको भी डबल लेटरबक्स कहो और अपने गुरुजीसे रसीद मँगाओ और भक्तरत्नावली कृत भाई मनीसिंहजी की सा० ७२ में आपके पांचवें गुरु अरजनजी भी पितरों को श्राद्ध पौंहचने की यौक्तिक गवाही देते हैं उनसे भी रसीद मंगवानी योग्य है (सेठा सुभागा उगवंदा अरोड़े चूहणिआं विच्च रहंदे सन उना अरदास कीती ऐथे जो पितरां

नमित्त दिंदे हैं वोह पितरां नू पौंहचदा है या नहीं तां वचन होइआ पौंहचदा है, गुरुनानकजी भी वचन कीता है—(नानक अग्गै सो मिलै जो खटै घालै देइ) तां उनां ने कहिआ भलाजी एह तां एथे पृथिवीपर सिखां या ब्राह्मणां नू खवावेगा ते पितरां नू जो स्वर्ग अथवा नर्क या किसी जून विच्च होवेंगे क्योंकर पौंहचेगा तां वचन होया जदों पितरां दे दिन आओंदे हैं तां सिखां दे पितर सिखां विच्च ते खत्री ब्राह्मणां होर वरणां दे पितर ब्राह्मणां विच आन प्रवेश करदे हैंन । ओह अहार उनां नू पौंहचदा है और सुनो लडका जो पतंग चड़ांवदा है । ते पतंग अकास में होती है, डोरि बालक के हत्थ होती है । तां उसी डोर दे मारग जगायकै दीपक पठाय देता है—तां पतंग नू जाय प्रापत हुंदा है । तैसे पितर किसे स्थान होते हैं, ते उन्हां दी मोह दी डोर पुत्रां में बंधी होती है । उस मोह द्वारा प्रसाद पितरां नू प्रापत हुंदा है ॥

लीजिये अब तो आपके पांचवें और दसवें गुरु

साहिब और भाई मनीसिंहजी गवाही देते हैं अब क्या संदेह है यदि गुरुके सच्चे सिख हो तो मृतक श्राद्ध कराया करो नहीं तो निस्संदेह नरक में वास होगा गुरु आज्ञा उलंघन का दण्ड ग्रन्थसाहिब में यही लिखा है ॥

प्रश्न ९ ॥ वक्त जंञू (यज्ञोपवीत) के असी पुत्र नू उसतरे नाल भद्र करांवदे थे अब सिख रोकदे हैंन की हुकम है 'उत्तर' सहजधारी के बेटे को कैंची से रीति करो केशधारी के बेटे को दही से केशी स्नान कराओ जनेऊ के समय ॥

(नोट)

पुन्यात्मा तत्त्वालसा जी देखो आपके गुरु जनेऊ पहनने की आज्ञा देते हैं आप जनेऊ तुड़वाने को अपना उत्तम धर्म मानते हैं गुरु साहिबों ने तो आपका पंथ केवल जनेऊ तिलक गौ ब्राह्मण की यवनों से रक्षा वास्ते बनाया था आप उलटा यवनों की सदृश बरताव करने लगगये वह जनेऊ तुड़वाते थे तिलक मिटाते थे आपभी पाहुल के समय पहिले

यही करते हो वह अपना जूठा खिलाते थे आपभी जूठा मिठा पानी पिलाते हो वह हिंदू कहने से चिड़ते थे आपभी उसी प्रकार बचते हो वह गौ ब्राह्मण के द्वेषी थे आप भी सोचलें उनसे कैसी मैत्री करते हो वह मंदिरों को गिराते थे परमेश्वर न करे यदि आपको न्यायकारी गवर्नमेंट का भय नहो तो वैसा ही करें। अर्थात् वह तमाम बातों में हिंदुओं से विरुद्ध थे वैसे ही आप होते जाते हैं परन्तु मुरदे के दाह करने और ग्रन्थ साहिब के मानने में हिन्दुओं से ऐक्यता जरूर है इसको भी दूर करो ॥ हिंदुओं में पहले भी बहुत फिरके थे परन्तु गौ का द्वेषी कोई भी न था बल्कि इस समय में तो बहुत से दीनदार मुसल्मान भी गौ की रक्षा में कटिबद्ध होरहे हैं परन्तु तत्त खालसा का शिरोमणी (हम हिंदू नहीं) का कर्ता भाई कान्हसिंह नाभा निवासी गौ गधे को बराबर कहकर बल्कि इससे भी आगे कदम रखकर अपनी सच्ची सिक्खी प्रकट करता है इसके विरुद्ध भाई मनीसिंह जी

भक्तरतनावली में गुरूजी का अवतार गौ ब्राह्मण की रक्षा वास्ते लिखते हैं यथा (जो तुसां औतार लीता है सो गौ ब्राह्मण की रक्षा वास्ते लीता है) साखी १२९ और साखी १३५ में लिखते हैं कि दसवें पातिशाही जी दा औतार धर्म वरतावन वास्ते होया है इना दे राज विच्च गौ ब्राह्मण ऋषी मुनीश्वरां सर्व दी रक्षा होवेगी। यदि इस वक्त गुरूजी होते तो उनको दिखलाते कि आपके शिष्य देखो गौ ब्राह्मण की कैसी रक्षा करते हैं परन्तु गुरु साहिबों का इसमें क्या दोष है यह तो कलियुगी शिष्यों की करतूत है उनको क्या मालूम था कि २०० साल के भीतर ही बाड़ खेती को खाने लग जावेगी और हमारा परिश्रम वृथा जावेगा अच्छा अब गुरू के सन्मुख बात सो बात, यहां जो चाहो सो करो।

॥ प्रश्न १ ॥ सच्चे पातशाह अग्गे असी अस्थिआं गंगाजी भेजते थे अब सिक्ख रोकदे हैं क्या हुकम है ॥ उत्तर ॥ जे पहुंचाय सको तां अस्थिआं गंगाजी

भेजो और जो सिख जुद्ध विच्च मरे वहां ही रहने दो क्योंकि वहां ही कुरुक्षेत्र है वा संतां की चर्ण धूड में अमृतसर की परिक्रमा में पावो ॥

(नोट)

देखो गुरु साहिब की स्पष्ट आज्ञा है कि हे प्यारे सिखो यदि तुम आप अथवा द्रव्य देकर किसी आदमी के हाथ अस्थि पहुंचासको तब तो गंगाजी में ही भेजो यदि निर्धन या अपाहज हो तो लाचारी है यही शास्त्र की आज्ञा है। और जुद्धभूमि को शास्त्रानुसार कुरुक्षेत्र समझकर वहां ही रहने की आज्ञा दी है अर्थात् हिंदू धर्मानुसार उपदेश है अमृतसर में संतां की चर्णधूड में केवल असमर्थ अथवा जुद्धमधी मृतक के वास्ते है सर्ववास्ते नहीं पहिले भी गुरुघर के समग्र मृतक पुरुषों की अस्थियां हरिद्वार जाती रहीं हैं देखो सूर्जप्रकाश आदि इतिहास कोई भी प्राचीन दृष्टान्त इसके विरुद्ध न होगा। शोक आजकल के मनमतियों पर है कोई आनंदपुर भेजता है कोई अमृतसर कोई सिर की

हड्डी पीसकर अमृतसर की परिक्रमा में डालता है बहुते उठाते ही नहीं अर्थात् आपोधापी होरही है गुरु आज्ञा की कुछ परवाह नहीं ॥

प्रश्न ७ ॥ अगे असीं राजदरबार में जाने वाले सिख दाड़ीआं दे केश कैंचीआं नाल कटाके बराबर कराते थे अब जो हुकम हो ॥ उत्तर ॥ सहजधारि यदि केशधारियों की सदृश केश साबत रखें तौ अच्छा है नहीं तो जरूरत मात्र बधीक रोम बराबर करवा लिआ करो परन्तु केशधारी कदापि न करावें ।

(नोट)

इस वाक्य में सहज धारियों के वास्ते कैंची साथ बाल कटाने की स्पष्ट आज्ञा है और केश धारियों के वास्ते बिलकुल नहीं परन्तु फिर भी तत्त्वखालसा के मूछों पर एक बाल भी छोटा बड़ा प्रतीत नहीं होता इस का क्या कारण है पिछले सिखों के दाहड़ी मूछों के बाल मिलकर मुंह को ढक लेते थे अब उस के विरुद्ध क्यों दिखाई देता है—दूसरे सिख जनेऊ

को सूत का धागा कहते हैं परन्तु बाल क्या घास के बराबर नहीं जो नित्य उत्पन्न होते हैं इन की रक्षा में गर्मियों में क्यों दुःख पाते हैं क्या बालों में ही वाहगुरु की प्रसन्नता है इस सूरत में तो रीछों आदि पशुओं से वाहगुरु अत्यन्त प्रसन्न होना चाहिये जो सिर से पैर तक केशधारी हैं एक अज्ञानी तत्तखालसा लिखता है कि गौओं की असी इज्जत जरूर करते हैं परन्तु उन की खातर किसी नाल डांगो डांगी नहीं होते हांजी जिन की बदौलत आपका जीवन है खेती बाड़ी है उन की खातर तो डांगोडांगी नहीं होते परन्तु बालों की खातर जिनसे तकलीफ के सिवाय कुछ लाभ नहीं और हरजगे मुफत मिलते हैं और कोई छूता नहीं उनकी खातर तलवारम् तलवारी होने को त्यार हों, शोक है इस बुद्धिपर और ग्रन्थसाहिब इन केशों के वास्ते कहता है (धावे लांबे केशकर भावे घरर मुडाइ) और वचन पहिले लिखेगये देखलो इस में एक संशय रहा कि बगल के केश

और अगले केशों वास्ते क्या आज्ञा है वह भी सदैव रक्षणीय हैं अथवा नहीं। हमने एक सिख को देखा है केशी स्नान के वक्त गुप्त केशोंको भी कछनी में हाथ डालकर दही मलकर धोता था इससे प्रतीत होता है कि सिरके केशों की सदृश वह भी रक्षणीय हैं जिससे चमजुएं पड़जाती हैं ॥

प्रश्न ८ ॥ सच्चे पातशाह जो हुकम हुआ है कि सिरभी मां अते पंजां मेलां दे कोई मुंह ना लगे जे कोई आऔंदा जांदा मुंह लगजावे तौ क्या हुक्म है ॥ उत्तर ॥ मुंह लगने दा कुछ डर नहीं परन्तु वरतना नहीं ॥

(नोट)

है कोई तत्तखालसा जो इस वचनपर आरूढ हो अब तो स्वार्थी रहगये जिसमे स्वार्थ सिद्ध हो सब से बरतलेंगे ॥

प्रश्न ९ ॥ जेहड़े सिख गंगाजी दे स्नान नू गये हैन जब स्नान करके आवन तौ क्योंकर वरतिये ॥ उत्तर ॥ हित प्यार नाल उना नाल वरतना दिक्क नहीं करना ॥

(नोट)

यदि प्रारब्ध अच्छी है तो नित्य गंगास्नान को जाया करो नहीं तो जमका भय व्यापेगा ।

आद ग्रन्थसाहिब में श्रीगंगा जलपान से जन्म मरन से मुक्त होने का उपदेश है ॥

गंगाजल गुरू गोविंद नाम ।
जो सिमरे तिसकी गत होवे ॥
पीवत बहुड़ न जोन भ्रामे ॥
राग भैरों महल्ला ५ शब्द ८ तुक १)

प्रश्न १० ॥ अगे मरेपर गरूड बचवाते थ अब पंडित नहीं आते क्या हुकम है ॥ उत्तर ॥ ग्रन्थ साहिब का पाठ कराओ और पंचवें महल्ले के संस्कृती श्लोकां दी कथा कराओ ॥

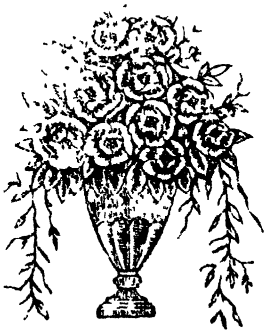
(नोट)

जब सिखों ने कहा पंडित नहीं आते तब कलगीधरजी ने क्रोधसे यह आज्ञा दी है वास्तव में उन का यह अभिप्राय न था क्योंकि तीसरे प्रश्न में कह चुके हैं कि भद्दना बिना होर क्रिया कर्म करतूत

जैसी देसाचाल होवे करवानी फिर उससे विरुद्ध उसी वक्त कच कहसक्के थे ऐसा विरोध तो किसी सामान्य पुरुष की वार्ता में भी नहीं होता कि पहिले कुछ कहदे फिर कुछ गुरुजी महापुरुष थे उनसे अत्यन्त असम्भव है, इसका तात्पर्य्य यही है कि यदि ब्राह्मण आवें तो गरुड़ बचवावो नहीं तो ऐसा करो। परन्तु फिर भी संस्कृती श्लोकों वास्ते आज्ञा साथ दी है क्योंकि संस्कृत को उत्तम जानते थे और उन श्लोकों में भी गरुड़ जैसा अभिप्राय है इससे भी गरुड का निषेध नहीं होता और उससमय के ब्राह्मणों को भी धन्यवाद है जो लोभ के कारण धर्मविरुद्ध काम नहीं करते थे आज वैसा समय नहीं प्रतीत होता, ब्राह्मण किसी से नहीं बचते वैसी ही अवज्ञा होती है अब भी यदि धर्माधर्म को विचार कर आचर्ण रखें तो वैसी ही प्रतिष्ठा होन लगजावे परन्तु ब्राह्मणों पर क्या है उनको लोग यूंही दोष लगाते हैं कलियुग के प्रभाव से सर्व वर्ण आश्रम विपरीत चल रहे हैं भगवान् शीघ्र

कलिकी अवतार लेकर मनमतियों पाखंडियों को सच्चे धर्म में स्थित करें और सिखों को गुरु साहिबों के हुकम "(गुरकिरत साकार कमावे)" पर निश्चय हो जिस से उक्त गुरु १० जी के दस हुकम सच्चे हों ॥ अलम् ॥

ह० सुखलाल उपदेशक
श्रीभारतधर्म्म महामण्डल रोपड़ निवासी।



(सूचना)

(१ नवीन सिंहों का अज्ञान भरा पुस्तक "हम हिन्दू नहीं" तीसरी बार छपे का अपूर्व खंडन "तुम हिन्दू हो" अर्थात नवीनसिंह मत मरदन वज्जर॥ गुरमुखी में ५०० पृष्ठका पुस्तक छपने वाला है

(२) एक प्रतिष्ठित जाट की वनाई पुस्तक "जट्ट चन्द्रिका" जो जाट जाती का महत्व प्रगट करती हुई जाटों को पाखंड मतों मे वचाने वाली अति उत्तम गुरमुखी में हमारे पास से ही। —) में मिल सकैगी ॥

पता—प० सुखलाल उपदेशक
श्रीभारतधर्म महामण्डल
मु० रोपड़ डाकखाना खास जिला अम्बाला.

यज्ञोपवीत ।

विदित हो कि कुछ दिनों से हमारे देशवासी प्राय: क्षत्रिय वैश्यों ने अज्ञान वा मूर्खों के बहकाने से यज्ञोपवीत संस्कार का त्याग करदिया है परन्तु धर्मशास्त्र में ऐसा लिखा है कि वर्णत्रय में से जिनका यज्ञोपवीत संस्कार वा गायत्री उपदेश नहीं हुआ वे व्रात्य अर्थात् शूद्रों से भी अधम और श्रेष्ठों में निन्दित होते हैं तथाह मनु: अध्याय २ श्लोक ३८। ३९। ४० आषोडशाद्ब्राह्मणस्य सावित्री नातिवर्तते। आद्वाविंशात् क्षत्रबन्धोराचतुर्विंशतेर्विश:॥ १॥ अत ऊर्ध्वं त्रयोऽप्येते यथाकालमसंस्कृता: । सावित्रीपतिता व्रात्या भवन्त्यार्य्यविगर्हिता: ॥ २ ॥ नैतैरपूतैर्विधिवदापद्यपिहि कर्हिचित् । ब्राह्मान्यौनांश्च संबन्धान् नाचरेद्ब्राह्मणै:सह॥ ३ ॥ अर्थात् सोलह वर्षतक ब्राह्मण को और बाईस वर्षतक क्षत्रिय को और चौबीस वर्षतक वैश्य को गायत्री उपदेश के विना न रहना चाहिये ॥ १ ॥ इस से उपरान्त इन तीनों का अपने अपने काल में जो संस्कार न हो तो उनको वैदिक लोग सावित्रीपतित और व्रात्य तथा महानिंदित जानते हैं ॥ २ ॥ जबतक वे विधिपूर्वक पवित्र न हों उनके साथ आपत्कालमें

भी अध्ययन अध्यापनादिक और कन्यादानादिक न करे ॥३॥ इत्यादि वचनों से प्रकट है कि जिन पुरुषों का यज्ञोपवीत संस्कार नहीं होता वे शूद्रों से भी अधम और सर्वधर्म बहिष्कृत हैं। बड़े आश्चर्य की बात है कि जब शास्त्र में यज्ञोपवीत और गायत्री मन्त्र रहित की ऐसी निन्दा लिखी है तो क्षत्रिय वैश्य अपने सनातनधर्म से क्यों विमुख होरहे हैं ? इसकारण हम क्षत्रिय तथा वैश्यों से निवेदन करते हैं कि जिन२ पुरुषों का यज्ञोपवीत संस्कार यथोक्त काल में नहीं हुआ वे प्रथम प्रायश्चित्त निमित्त यथाशक्ति अघमर्षण वा गायत्री मन्त्र का जप करावें फिर अब अपना २ यज्ञोपवीत करालें और आगे को अपने पुत्र पौत्रादिकों का यज्ञोपवीत विवाह से पहिले करादिया करें यज्ञोपवीत के विना विवाह न करें। यह भी प्रकट हो कि मनु में वर्णत्रय को एकही गायत्री मंत्र की आवश्यक आज्ञा है तथाहि–एतयर्चा विसंयुक्तः काले च क्रियया स्वया। ब्रह्मक्षत्रियविड्योनिर्गर्हणां याति साधुषु ॥ अध्याय २ श्लोक ८० अर्थात् इस ऋचा से रहित और काल में अपनी क्रिया से रहित ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य सज्जनों में निन्दा के योग्य होते हैं जो कोई क्षत्रिय वैश्यों को यज्ञोपवीत

संस्कार तथा गायत्री मन्त्र से रोकते हैं वस्तुतः वे शास्त्रवि-रोधी हैं शास्त्रबाह्य गले में कण्ठी बाँधकर गुरु कहलानेवालों को भी उचित है कि वे यज्ञोपवीतदा का प्रचार करें ॥

दयानंदमतखंडन की पुस्तकें।

दयानंद हृदय-द० की बुद्धि--द० मत दर्पण-द० मत मूर्छा---नवीनमतसमीक्षा---धर्मसंताप इन पुस्तकों को जो महाशय चाहें आप छपायें और सर्वत्र फैलायें धर्मार्थ बांटनेवालों को ७) की हजार प्रति जिस पुस्तक को वे चाहें छपाकर हम देंगे पुस्तकपर उनका नाम भी छपादेंगे उक्त पुस्तकों का बांटना स्वधर्मरक्षा का परमोपाय है जो कोई उक्त पुस्तकों में से किसी एक पुस्तकको भी एकबार ध्यानपूर्वक पढलेगा फिर वह किसीके बहकाने से दयानंदीमत में कदापि न घुसेगा, अतः धर्मसभायें वर्षोत्सवों में और धनी धर्मात्मा सज्जनलोग तीर्थयात्रा तथा विवाहादि में हजार २ प्रति अवश्य ही धर्मार्थ बांटें ॥

मैनेजर-सनातनधर्म प्रेस मुरादाबाद.

(विज्ञापन)

जिन सच्चे धर्मावलम्बियों ने तत्वखालसा के धर्म से वरूद्ध झूठे कपट भरे लेखों का खंडन देखना हो वह मेरी रचित निम्न लिखत पुस्तकें देखें।

(१) नवीनसिंह शिक्षा नागरी ३३५ पृष्ट टैप ।-)

(२) नवीनसिंहासिख्या गुरमुखी ४८० पृष्ट टैप ॥)

(३) गुरु घर में दानविधि नागरी ।)

(४) तत्त्वखालसा की पोल नागरी —)

(५) खालसा कुरीति निवारन गुरमुखी —)

(६) सिखों की वाजवुल अर्ज़ नागरी —)

पुस्तकें मिलनेका पता—

प० सुखलाल उपदेशक

श्रीभारतधर्म महामण्डल

मु० रोपड़ डाकखाना खास जिला अम्बाला.